ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 412-413
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

शिशु के विकास में टीकाकरण जरूरत है या औपचारिकता

नित्या कुमारी
असि0 प्रोफेसर– डिपार्टमेंट ऑफ होम साइंस, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया (बिहार), भारत

Received- 28.06.2020, Revised- 02.07.2020, Accepted - 05.07.2020 E-mail: - dr.ramnyadav@gmail.com

सारांश : ***जीवन की शुरुआत में बच्चों का टीकाकरण करवाना आवश्यक होता है। प्रत्येक वर्ष 1.7 मिलियन बच्चे खतरनाक बीमारियों के कारण मर जाते हैं। जिन्हें उपलब्ध टीकों से रोका जा सकता है, जो बच्चे टीका.त है, वह खतरनाक बीमारियों के खिलाफ बच्चे को प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं, जो बच्चा टीकाकरण ना हो वह खसरे, कुकर–खांसी और अन्य बीमारियों से ग्रसित हो सकता है। सही समय पर टिका नहीं मिलने पर कुपोषण होने के साथ–साथ कई तरह के दोष देखने को मिलते हैं। हमें गर्भावस्था के दौरान ही टीकाकरण की आवश्यकता होती है जिससे नवजात शिशु को जन्म के पहले ही सुरक्षा प्रदान हो।***

कुंजीभूत शब्द– टीकाकरण, आवश्यक, खतरनाक बीमारियों, उपलब्ध, खिलाफ, प्रतिरोधक क्षमता, ग्रसित ।

मगर आज एक ऐसी बीमारी के प्रकोप का सामना कर रहे हैं, जिसका कोई इलाज नहीं है। इस स्थिति में ज्यादातर हमारे नवजात शिशु और गर्भावती महिला पर इसका बहुत ही गलत प्रभाव पड़ रहा है।

टीकाकरण को औपचारिकता मानकर चलना हमारे लिए बेवकूफी है। हमें अगर हर बीमारी से सुरक्षित होना है तो हमें ये तरीके अपनाना चाहिए।

1. टीकाकरण समय पर लेना चाहिए। इससे वंचित ना रहें।
2. टीकाकरण के साथ–साथ हमें खानपान का पूरा ध्यान रखना चाहिए। प्राकृतिक खानपान पर आश्रित ज्यादा रहें।
3. आयुर्वेदिक एवं हर्बल सामग्री उत्पाद का सेवन करना चाहिए।
4. नियमित दिनचर्या, योगासन, साफ सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
5. जब बच्चा गर्भ में हो उसी समय से सारी बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

आज के बदलते पर्यावरण और लोगों की रहन–सहन में काफी परिवर्तन हो गया है। सारी बात को ध्यान में रखते हुए हमारे शरीर में किसी बीमारी के प्रति लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए टीका को किसी भी रूप में हमारे शरीर में लेना चाहिए। दवा या इंजेक्शन के माध्यम से दिया जाए। शरीर में मौजूद एंटीबॉडीज हमें उससे घातक बीमारी से बचाती है। इसलिए किसी भी संक्रमण रोग की रोकथाम के लिए टीकाकरण करवाना बहुत ही जरूरी है और अनिवार्य है। किसी बीमारी के टीके की अहमियत अब दुनिया को पता चल रही है लेकिन फिर भी कई लोग टीकाकरण के प्रति गलत धारणा बनाए रखते हैं।

दलील देते हैं कि पहले के जमाने में कौन सी टिका होता था। इसे लोग पैसे कमाने का धंधा मानते हैं। ऐसे लोग जो दिव्यांग पैदा ले रहे हैं उन्हें माता–पिता के पूर्व जन्मों के गलत कार्यों का परिणाम मानते हैं।

जिन लोगों की सोच ऐसी है वह इस सोच को बदल डाले। एक टीकाकरण ही है, जिससे दुनिया सुरक्षित है। टीकाकरण के बूते ही आज शिशु और मातृ मृत्यु दर में बहुत कमी पाई जा चुकी है। इंसान हमेशा अपने अस्तित्व को लेकर बहुत सजग और सतर्क रहा है।

मानव कल्याण या अपने अस्तित्व को बरकरार रखने को जब जब इसे जिस जिस चीज की जरूरत महसूस हुई उसकी खोज की दिनों, महीनों और वर्षों भले ही लगे हों लेकिन हमारे शोध करने वाले विद्वानों का प्रयास रंग लाया है और उनका यह प्रयास इंसानियत के लिए वरदान साबित हुआ है।

21वीं सदी में चिकित्सा के क्षेत्र की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि ज्यादातर घातक बीमारियों का निदान बचपन में ही टीकाकरण द्वारा कर लिया जाता है। चिकनगुनिया, इबोला, निपाह और कोरोना जैसे वायरस समय–समय पर शोधकर्ताओं को चुनौती देते रहे हैं। चीन में पैदा हुआ कोरोना वायरस महामारी बन चुका है। दुनिया भर में इस बीमारी को लेकर भय व्याप्त है। कोरोना इंसानों के अस्तित्व पर भले ही संकट बना हो लेकिन अमेरिका सहित कई देश और बड़ी दवा कंपनियां दवा और टीके की ईजाद में रात–दिन एक किए हैं। भारत में भी इसका प्रयास चल रहा है। टीकों के दम पर ही कई संक्रामक बीमारियों पर अंकुश लगा है।

दवाओं से किसी मरीज को ठीक किया जा सकता

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

है, लेकिन टीका ही ऐसा विकल्प है, जिससे बीमारी से बचाव संभव होता है। विश्व संगठन के मुताबिक सभी आयु वर्गों में हर साल 20 से 30 लाख मौतें टीकाकरण के दम पर टाली जाती है। हर साल 15 लाख बच्चे किसी ना किसी रोग की वजह से दम तोड़ देते हैं । इनकी असमय मौत को टीकाकरण के माध्यम से रोका जा सकता है। यदि बचपन में समय पर टीका नहीं लगाया गया तो वह बड़े होने पर किसी भी बीमारी का सामना करना पड़ता है।

जब तक रोग समाप्त नहीं हो जाता है तब तक टीकाकरण करते रहना चाहिए । टीकाकरण महत्वपूर्ण है। भले ही बीमारी के कुछ ही मामले हैं, अगर हम टीकाकरण द्वारा दी गई सुरक्षा को हटा दें तो अधिक से अधिक लोग संक्रमित होंगे और दूसरे लोग संक्रमित हो गया तो दूसरे लोगों में बीमारी फैल आएंगे। इसलिए यह जरूरी है कि टीकाकरण में सुस्ती या लापरवाही नहीं हो।

धारणा है कि टीका लगाने से उसका साइड इफेक्ट पड़ेगा। ऐसा बिल्कुल नहीं है। मानकों का परीक्षण करने के बाद ही उसे बाजार में लाया जाता है। इसलिए टीके का फायदा बहुत है, नुकसान बिल्कुल नहीं है।

सदियों से किए जा रहे अध्ययन और शोध बताते हैं कि किसी भी संक्रामक बीमारी की रोकथाम के लिए टीकाकरण बहुत ही प्रभावी और कारगर तरीका है।

व्यापक स्तर पर लोगों की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करके ही दुनिया में चेचक, पोलियो और टिट्नस जैसे रोगों से निजात पाई है। लिहाजा कोरोना से सबक लेते हुए आज ही अपने स्वजनों को उनके लिए जरूरी टीके जरूर दिलाएं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अंकिचन, सीताराम (1973) "डेमोक्रेशी एण्ड लीडरशीपएक्पेटेशन इन इण्डिया", इण्डियन पोलिटिकल पार्टिज एण्ड पोलिटिक्स, दिल्ली ।
2. अकिंचन, एस (1977) "कास्ट आइडियोलोजी एण्ड अनहचे विलिटी नीड ऑफ हद हावर", जर्नल ऑफ पोलिटिकल स्टडीज, सितम्बर, 1977.
3. अग्रवाल, जे0के0, भारतीय सामाजिक संस्थाएँ, पृष्ठ सं0–52 से 75.
4. अग्रवाल, गोपाल कृष्ण, समाजशास्त्र, साहित्य भवनः पृष्ठ सं0–375 से 408.
5. अहमद, इमत्याज, बिहार एक परिचय, नेशनल पब्लिकेशन, पटना–4, 1966.
6. अनुराधा एवं डॉ0 कान्ति पाण्डेय, आहार एवं पोषण, भारती प्रकाशन, पृष्ठ सं0–24 से 31, पटना, 1994.
7. आई0सी0एम0आर0, मेडिकल इनक्लेव, स्टीज ऑन वेल्यू ऑफ इन्डियन फूड्स, अन्सारी नगर, नई दिल्ली, 1977, पेज–779.
8. इण्डियन कॉन्सिल ऑफ मेडिकल रिचर्स, स्पेशल रिपोर्ट, सिरियल नं0 42, पृष्ठ संख्या–28.
9. इन एडवान्स हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, पेज–149–50.
10. डॉ0 जोशी, ओम प्रकाश, सामान्य समाजशास्त्र, पृष्ठ संख्या–32 से 36.
11. डॉ0 लवामिया, एम0एम0, भारतीय समाज में सामाजिक समस्याएँ एवं सामाजिक परिवर्तन, पृष्ठ सं0–15 से 70.

*****